१२. चलो आज हम दीप जलाएँ

– सुरेंद्रनाथ तिवारी

भारतभूमि के वंदन हित,
राष्ट्रदेव के अभिनंदन हित,
जन-जन में चेतना जगाएँ ।
चलो आज हम दीप जलाएँ ।
आजादी के उस प्रताप का रक्त गिरा था जहाँ-जहाँ पर,
राणा के चेतक की टापें जहाँ-जहाँ थीं पड़ी, वहाँ पर !
और बिलाव घास की रोटी ले भागा था जिन कुंजों में,
नन्हीं भूखी राजकुमारी, बिलख रही थी खड़ी जहाँ पर ।
हल्दी घाटी की परती पर,
आजादी की उस धरती पर
चलो आज आरती सजाएँ ।
चलो आज हम दीप जलाएँ ।
लक्ष्मीबाई का घोड़ा था ठिठका, जहाँ नदी के तट पर,
जहाँ शिवाजी कैद हुए थे उस कारागृह की चौखट पर ।
वीर भगत सिंह की समाधि पर, अशफाक-ओ-आजाद के घर-घर
कुँअर सिंह ने गलित बाँह वह, काटी थी जिस गंगा तट पर ।
राजगुरु-सुखदेव मही पर
दुर्गा भाभी की देहरी पर,
बिस्मिल की उस विस्मृत भू-पर
और सुभाष की वीर प्रसू पर ।
आजादी का प्रण दुहराएँ ।
चलो आज हम दीप जलाएँ ।
जलियाँवाला की धरती पर, लहूलुहान लाल परती पर
शिशु को गोद लिए ललनाएँ, कट-कटकर गिर गईं मही पर
शीश कटा पर झुका नहीं, उन शीशगंज के गुरुद्वारों पर।
नन्हे शिशु चिन गए जहाँ, उन अत्याचारी दीवारों पर ।
कारगिल के उन शिखरों पर, जहाँ खून ताजा है अब भी,
वीरगति को प्राप्त हुए जो, हर जवान के दरवाजे पर ।
राष्ट्रदेव की प्राण प्रतिष्ठा में
उनकी अब आरती सजाएँ
चलो आज हम दीप जलाएँ ।

— ० —

परिचय

जन्म : १९५३, चंपारन (बिहार)

परिचय : सुरेंद्रनाथ तिवारी जी भारतीय सेना के पूर्व कमीशन अधिकारी हैं । पिछले बीस वर्षों से अमेरिका के विश्वविद्यालयों में इंजीनियरिंग मैनेजमेंट का अध्यापन कर रहे हैं । आप अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति के अध्यक्ष भी रहे हैं ।

प्रमुख कृतियाँ : 'वह कविता है', 'कुछ तो गाओ', 'चलो आज हम दीप जलाएँ', 'अमीरों के कपड़े' (कविता), 'उपलब्धि' (कहानी), 'संउसे सहरिया' (संस्मरण) आदि ।

पद्य संबंधी

प्रस्तुत गीत में सुरेंद्रनाथ तिवारी जी ने ऐतिहासिक स्थलों, इनसे संबंधित महान विभूतियों, बलिदानियों का उल्लेख किया है । आपका कहना है कि ये सभी हमारे गौरव के प्रतीक हैं । हमें इनका सदैव सम्मान करना चाहिए। आपका मानना है कि हर भारतीय का यह पावन कर्तव्य है कि हम उन स्थलों पर दीप जलाएँ और उन बलिदानियों की आरती उतारें ।

शब्द संसार

ठिठका स्त्री.सं.(सं.) = अचानक रूक जाना
देहरी स्त्री.सं.(दे.) = दहलीज
विस्मृत वि.(सं.) = भुलाया हुआ
प्रसू स्त्री.वि.(सं.) = पैदा करने वाली
मही स्त्री.सं.(सं.) = पृथ्वी

स्वाध्याय

✲ सुचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) कारण लिखिए :

१. हल्दी घाटी पर दीपक जलाने का -------
२. कारगिल के शिखरों पर दीपक जलाने का -------

(२) जोड़ियाँ मिलाइए :

अ	आ	उत्तर
१. राणा प्रताप	धरती	-------------
२. रानी लक्ष्मीबाई	कारागृह	-------------
३. शिवाजी महाराज	गंगा तट	-------------
४. कुँअर सिंह	रक्त	-------------
५. जलियाँवाला	घोड़ा	-------------
	समाधि	-------------

(३) निम्न स्थानों का महत्त्व दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

१. जलियाँवाला बाग -
२. हल्दी घाटी -

(४) निम्न मुद्दों पर आधारित पद्य का विश्लेषण कीजिए :

१. रचनाकार का नाम
२. रचना की विधा
३. पसंदीदा पंक्ति
४. पसंद होने के कारण
५. कविता से प्राप्त प्रेरणा/संदेश

(५) भावार्थ लिखिए :

लक्ष्मीबाई का घोड़ा था, ...
....
....
.... गंगा तट पर ।

अभिव्यक्ति 'मानवता ही सच्चा धर्म है' पर अपने विचार लिखिए ।

अपठित पद्यांश

*** परिच्छेद पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–**

परोपकार ही मानवता है, जैसा कि राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा है – 'वही मनुष्य है जो मनुष्य के लिए मरे ।' केवल अपने दुख-सुख की चिंता करना मानवता नहीं, पशुता है । परोपकार ही मानव को पशुता से सदय बनाता है ।

वस्तुतः निस्स्वार्थ भावना से दूसरों का हित साधन ही परोपकार है । मनुष्य अपनी सामर्थ्य के अनुसार परोपकार कर सकता है । दूसरों के प्रति सहानुभूति करना ही परोपकार है और सहानुभूति किसी भी रूप में प्रकट की जा सकती है । किसी निर्धन की आर्थिक सहायता करना अथवा किसी असहाय की रक्षा करना परोपकार के रूप हैं । किसी पागल अथवा रोगी की सेवा-शुश्रूषा करना अथवा किसी भूखे को अन्नदान करना भी परोपकार है । किसी को संकट से बचा लेना, किसी को कुमार्ग से हटा देना, किसी दुखी-निराश को सांत्वना देना-ये सब परोपकार के ही रूप हैं । कोई भी कार्य, जिससे किसी को लाभ पहुँचता है, परोपकार है, जो अपनी सामर्थ्य के अनुसार विभिन्न रूपों में किया जा सकता है ।

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

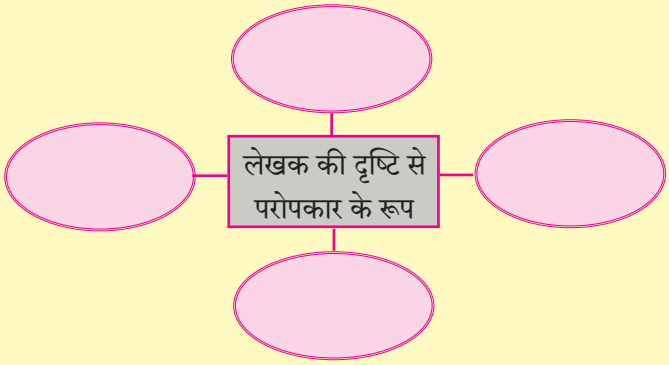

(२) 'वही मनुष्य है जो मनुष्य के लिए मरे' इस पंक्ति का तात्पर्य लिखिए ।

(३) १. वचन परिवर्तन कीजिए :

१.चिंता – _____ २. भूखे – _____

२. निम्न शब्दों के लिंग पहचानिए:

१. सामर्थ्य – _____ २. परोपकार – _____

(४) 'परहित सरिस धरम नहिं भाई' पर अपने विचार लिखिए ।

7JPSEP

शब्द

(१) विकारी शब्द और उनके प्रकार

संज्ञा	सर्वनाम	विशेषण	क्रिया
जातिवाचक	पुरुषवाचक	गुणवाचक	सकर्मक
व्यक्तिवाचक	निश्चयवाचक अनिश्चयवाचक	परिमाणवाचक १.निश्चित २.अनिश्चित	अकर्मक
भाववाचक	निजवाचक	संख्यावाचक १. निश्चित २. अनिश्चित	संयुक्त
द्रव्यवाचक	प्रश्नवाचक	सार्वनामिक	प्रेरणार्थक
समूहवाचक	संबंधवाचक	–	सहायक

(२) अविकारी (अव्यय) शब्द और उनके प्रकार, अव्यय पहचानना और प्रयोग

- क्रियाविशेषण
- संबंधसूचक
- समुच्चयबोधक
- विस्मयादिबोधक

(३) संधि और उसके प्रकार

- स्वर संधि
- व्यंजन संधि
- विसर्ग संधि

(४) काल और उनके प्रकार–उपप्रकार

- वर्तमानकाल
  - सामान्य
  - अपूर्ण
  - पूर्ण
- भूतकाल
  - सामान्य
  - अपूर्ण
  - पूर्ण
- भविष्यकाल
  - सामान्य
  - अपूर्ण
  - पूर्ण

(५) वाक्य के प्रकार

- रचना की दृष्टि से
  - साधारण
  - मिश्र
  - संयुक्त
- अर्थ की दृष्टि से
  - विधानार्थक
  - निषेधार्थक
  - प्रश्नार्थक
  - आज्ञार्थक
  - विस्मयाधिबोधक
  - संदेशसूचक

(६) छंद और उनके प्रकार

- दोहा
- चौपाई
- सोरठा

(७) **अलंकार और उसके प्रकार–उपप्रकार**

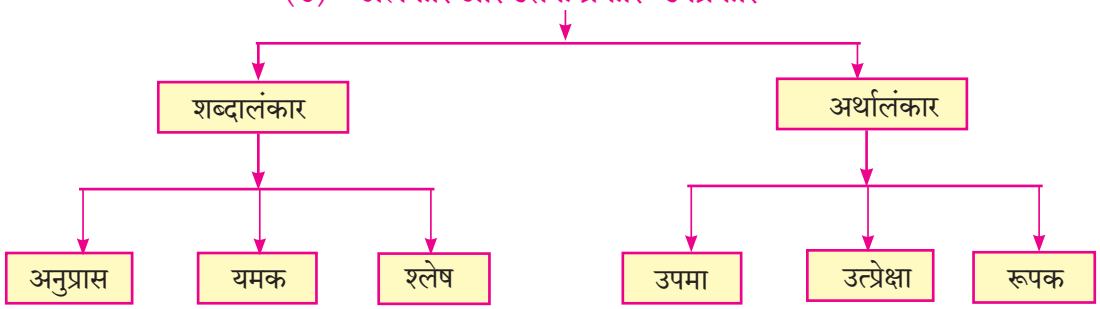

(८) **कारक एवं कारक चिह्न**

(९) **मुहावरे और कहावतें**

(१०) **विरामचिह्न और उनके प्रयोग**

(११) **वाक्य शुद्धीकरण**

(१२) **समास**

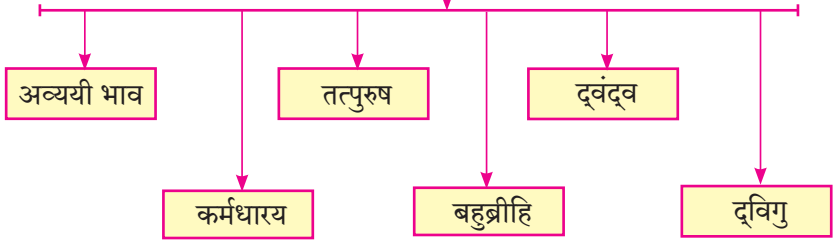

शब्द संपदा– व्याकरण पाँचवीं से नौवीं

लिंग, वचन, विलोमार्थक, पर्यायवाची, शब्दयुग्म, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द, भिन्नार्थक शब्द, मराठी–हिंदी समोच्चारित, कठिन शब्दों के अर्थ, उपसर्ग–प्रत्यय पहचानना/अलग करना, कृदंत, तद्धित पहचानना / मूल शब्द अलग करना ।

वर्ण, वर्ण मेल और वर्ण विच्छेद पढ़िए, समझिए और करिए :

- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ
- इनका उच्चारण स्वतंत्र रूप से किया जाता है ।
- ये व्यंजनों के उच्चारण में सहायता करते हैं ।

- क्, च्, त्, प्, ...मूल व्यंजन हैं ।
- ये स्वरों की सहायता के बिना नहीं बोले जाते ।
- व्यंजनों में स्वरों को मिलाकर लिखा और बोला जाता है । क्+अ=क, न्+अ=न, प्+ओ=पो

स्वर — **व्यंजन**

वर्ण
वह मूल ध्वनि जिसके खंड नहीं होते ।

वर्ण विच्छेद		वर्ण विच्छेद	
भक्ति	भ्+अ+क्+त्+इ	युक्ति	----------
मिट्टी	म्+इ+ट्+ट्+ई	स्वस्थ	----------
बुढ़ापा	ब्+उ+ढ़्+आ+प्+आ	उर्जस्वित	----------
		स्तब्ध	----------

वर्ण मेल		वर्ण मेल	
व्+इ+द्+ए+श्+ई	विदेशी	प्+उ+स्+त्+अ+क्+अ	---------
भ्+औ+ग्+ओ+ल्+इ+क्+अ	भौगोलिक	म्+ऊ+र्+त्+इ	---------
प्+ ऋ+थ्+व्+ई	पृथ्वी	अ+स्+त्+इ+त्+व्+अ	---------
		व्+इ+श्+र्+आ+म्+अ	---------

ध्यान में रखिए :– क्ष, त्र, श्र और ज्ञ संयुक्त वर्ण हैं :–
क्ष =क्+ष्+अ, त्र=त्+र्+अ, श्र =श्+र्+अ, ज्ञ=ज्+ञ्+अ

पत्रलेखन

अपने विचारों, भावों को शब्दों के द्‌वारा लिखित रूप में अपेक्षित व्यक्ति तक पहुँचा देने वाला साधन है पत्र ! हम सभी 'पत्रलेखन' से परिचित हैं ही । आजकल हम नई-नई तकनीक को अपना रहे हैं । संगणक, भ्रमणध्वनि, अंतरजाल, ई-मेल, वीडियो कॉलिंग जैसी तकनीक को अपने दैनिक जीवन से जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं । दूरध्वनि, भ्रमणध्वनि के आविष्कार के बाद पत्र लिखने की आवश्यकता कम महसूस होने लगी है फिर भी अपने रिश्तेदार, आत्मीय व्यक्ति, मित्र/सहेली तक अपनी भावनाएँ प्रभावी ढंग से पहुँचाने के लिए पत्र एक सशक्त माध्यम है । पत्रलेखन की कला को आत्मसात करने के लिए अभ्यास की आवश्यकता होती है । अपना कहना (माँग/शिकायत/अनुमति/विनती/आवेदन) उचित तथा कम-से-कम शब्दों में संबंधित व्यक्ति तक पहुँचाना, अनुरूप भाषा का प्रयोग करना एक कौशल है । अब तक हम जिस पद्‌धति से पत्रलेखन करते आए हैं, उसमें नई तकनीक के अनुसार अपेक्षित परिवर्तन करना आवश्यक हो गया है । ।

पत्रलेखन में भी आधुनिक तंत्रज्ञान/तकनीक का उपयोग करना समय की माँग है । आने वाले समय में आपको ई-मेल भेजने के तरीके से भी अवगत होना है । अतः इस वर्ष से पत्र के नये प्रारूप के अनुरूप ई-मेल की पद्‌धति अपनाना अपेक्षित है ।

*** पत्र लेखन के मुख्य दो प्रकार हैं, औपचारिक और अनौपचारिक । (पृष्ठ क्र. ५१, ७७)**

औपचारिक पत्र

• प्रति लिखने के बाद पत्र प्राप्तकर्ता का पद और पता लिखना आवश्यक है । • पत्र के विषय तथा संदर्भ का उल्लेख करना आवश्यक है । • इसमें महोदय/महोदया शब्द द्‌वारा आदर प्रकट किया जाता है । • निश्चित तथा सही शब्दों में आशय की प्रस्तुति करना अपेक्षित है । • पत्र का समापन करते समय बायीं ओर पत्र भेजने वाले का नाम, पता लिखना चाहिए। • ई-मेल आई डी देना आवश्यक है ।

अनौपचारिक पत्र

• संबोधन तथा अभिवादन रिश्तों के अनुसार, आदर के साथ करना चाहिए । • प्रारंभ में जिसको पत्र लिखा है उसका कुशलक्षेम पूछना चाहिए । • लेखन स्नेह सम्मान सहित प्रभावी शब्दों और विषय विवेचन के साथ होना चाहिए। • रिश्ते के अनुसार विषय विवेचन में परिवर्तन अपेक्षित है। • इस पत्र में विषय उल्लेख आवश्यक नहीं है । • पत्र का समापन करते समय बायीं ओर पत्र भेजने वाले के हस्ताक्षर, नाम तथा पता लिखना आवश्यक है ।

टिप्पणी : पत्रलेखन में अब तक लिफाफे पर पत्र भेजने वाले (प्रेषक) का पता लिखने की प्रथा है । ई-मेल में लिफाफा नहीं होता है । अब पत्र में ही पता लिखना अपेक्षित है ।

पत्र का प्रारूप
(औपचारिक पत्र)

दिनांक :
प्रति,
.....
.....
विषय : .....
संदर्भ : .....
महोदय,
विषय विवेचन .....
.....
.....

भवदीय/भवदीया,
नाम : .....
पता : .....
.....
ई-मेल आईडी : .....

गद्य आकलन (प्रश्न निर्मिति)

• भाषा सीखकर प्रश्नों की निर्मिति करना एक महत्त्वपूर्ण भाषाई कौशल है । पाठ्यक्रम में भाषा कौशल को प्राप्त करने के लिए प्रश्ननिर्मिति घटक का समावेश किया गया है । • दिए गए परिच्छेद (गद्यांश) को पढ़कर उसी के आधार पर पाँच प्रश्नों की निर्मिति करनी है । प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में हों, ऐसे ही प्रश्न बनाए जाएँ ।

*** प्रश्न ऐसे हों :** • तैयार प्रश्न सार्थक एवं प्रश्न के प्रारूप में हों । • प्रश्नों के उत्तर दिए गए गद्यांश में हों । • रचित प्रश्न के अंत में प्रश्नचिह्न लगाना आवश्यक है । • प्रश्न रचना का कौशल प्राप्त करने के लिए अधिकाधिक अभ्यास की आवश्यकता है । • प्रश्न के उत्तर नहीं लिखने है । • प्रश्न की रचना पूरे गद्यांश पर होनी आवश्यक है ।

*** प्रश्न निर्मिति के लिए आवश्यक प्रश्नवाचक शब्द निम्नानुसार हैं :**

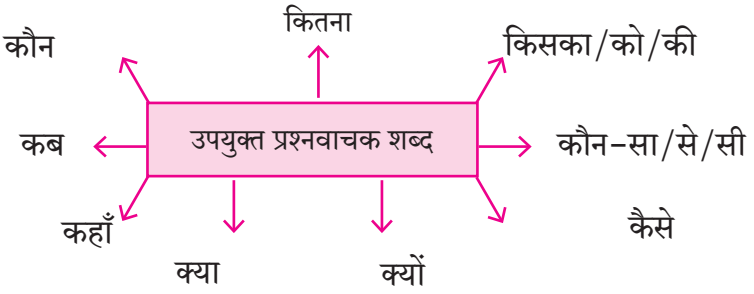

वृत्तांत लेखन

वृत्तांत का अर्थ है- घटी हुई घटना का विवरण/रपट/अहवाल लेखन । यह रचना की एक विधा है । इसे विषय के अनुसार लिखना पड़ता है। वृत्तांत लेखन एक कला है, जिसमें भाषा का कुशलतापूर्वक प्रयोग करना होता है । यह किसी घटना, समारोह का विस्तृत वर्णन है जो किसी को जानकारी देने हेतु लिखा होता है । इसे रिपोर्ताज, इतिवृत्त, अहवाल आदि नामों से भी जाना जाता है ।

वृत्तांत लेखन के लिए ध्यान रखने योग्य बातें : • वृत्तांत में घटित घटना का ही वर्णन करना है । • घटना, काल, स्थल का वर्णन अपेक्षित होता है । साथ-ही-साथ घटना जैसी घटित हुई उसी क्रम से प्रभावी और प्रवाही भाषा में वर्णित हो । • वृत्तांत लेखन लगभग अस्सी शब्दों में हो । समारोह में अध्यक्ष/उद्घाटक/व्याख्याता/वक्ता आदि के जो मौलिक विचार/संदेश व्यक्त हुए हैं उनका संक्षेप में उल्लेख हो • भाषण में कहे गए वाक्यों को दुहरा अवतरण '' ..... '' चिह्न लगाकर लिखना चाहिए । • आशयपूर्ण, उचित तथा आवश्यक बातों को ही वृत्तांत में शामिल करें । • वृत्तांत का समापन उचित पद्धति से हो ।

वृत्तांत लेखन के विषय : शिक्षक दिवस, हिंदी दिवस, वाचन प्रेरणा दिवस, शहीद दिवस, राष्ट्रीय विज्ञान दिवस, वैश्विक महिला दिवस, बालिका दिवस, बाल दिवस, दिव्यांग दिवस, क्रीड़ा महोत्सव, वार्षिक पुरस्कार वितरण, वन महोत्सव आदि ।

उदाहरण : १. नीचे दिए विषय पर वृत्तांत लेखन कीजिए :

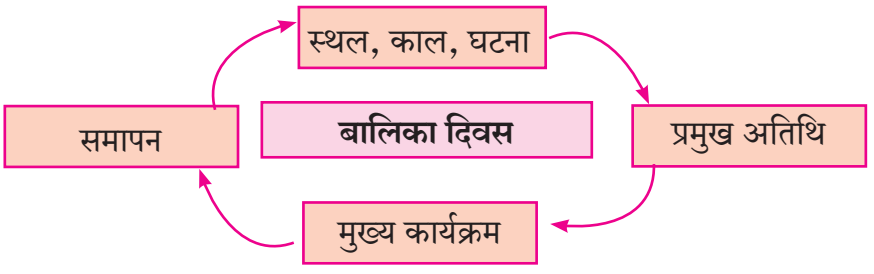

२. अपने परिसर में मनाए गए 'अंतरराष्ट्रीय दिव्यांग दिवस' का वृत्तांत लगभग अस्सी शब्दों में लिखिए ।
(वृत्तांत में स्थल, काल, घटना का उल्लेख आवश्यक है ।)

कहानी लेखन

कहानी सुनना-सुनाना आबाल वृद्धों के लिए रुचि और आनंद का विषय होता है । कहानी लेखन विद्यार्थियों की कल्पनाशक्ति, नवनिर्मिति व सृजनशीलता को प्रेरणा देता है । इसके पूर्व की कक्षाओं में आपने कहानी लेखन का अभ्यास किया है । कहानी, घटना अपनी कल्पना और सृजनशीलता से रची जाती है । कहानी का मूलकथ्य (कथाबीज) उसके प्राण होते हैं । मूल कथ्य के विस्तार के लिए विषय को पात्र, घटना, तर्कसंगत विचारों से परिपोषित करना लेखन कौशल है । इसी लेखन कौशल का विकास करना कहानी लेखन का उद्‌देश्य है । कहानी लेखन का उद्‌देश्य मनोरंजन तथा आनंदप्राप्ति भी है ।

कहानी लेखन में निम्न बातों की ओर विशेष ध्यान दें : • शीर्षक, कहानी के मुद्‌दों का विस्तार और कहानी से प्राप्त सीख, प्रेरणा, संदेश ये कहानी लेखन के अंग हैं । • कहानी भूतकाल में लिखी जाए । कहानी के संवाद प्रसंगानुकूल वर्तमान या भविष्यकाल में हो सकते हैं । संवाद दोहरे अवतरण चिह्न में लिखना अपेक्षित है । • कहानी लेखन की शब्दसीमा सौ शब्दों तक हो । • कहानी के आरंभ में शीर्षक लिखना आवश्यक होता है । शीर्षक छोटा, आकर्षक, अर्थपूर्ण और सारगर्भित होना चाहिए । • कहानी में कालानुक्रम, घटनाक्रम और प्रवाह होना आवश्यक है । प्रत्येक मुद्‌दे या शब्द का अपेक्षित विस्तार आवश्यक है । • घटनाएँ धाराप्रवाह अर्थात एक दूसरे से शृंखलाबद्‌ध होनी चाहिए । • कहानी के प्रसंगानुसार वातावरण निर्मिति होनी चाहिए । उदा. जंगल में कहानी घटती है तो जंगल का रोचक, आकर्षक तथा सही वर्णन अपेक्षित है । • कहानी के मूलकथ्य/विषय (कथाबीज) के अनुसार पात्र व उनके संवाद, भाषा पात्रानुसार प्रसंगानुकूल होने चाहिए । • प्रत्येक परिसर/क्षेत्र की भाषा एवं भाषा शैली में भिन्नता/विविधता होती है । इसकी जानकारी होनी चाहिए । • अन्य भाषाओं के उद्‌धरण, सुवचनों आदि के प्रयोग से यथासंभव बचे । • कहानी लेखन में आवश्यक विरामचिह्नों का प्रयोग करना न भूलें । • कहानी लेखन करते समय अनुच्छेद बनाएँ । जहाँ एक विचार, एक घटना समाप्त हो, वहाँ परिच्छेद समाप्त करें । • कहानी का विस्तार करने के लिए उचित मुहावरे, कहावतें, सुवचन, पर्यायवाची शब्द आदि का प्रयोग करें ।

कहानी लेखन-[शब्द सीमा अस्सी से सौ तक]

कहानी लेखन के प्रकार

(१) शब्दों के आधार पर

(२) मुद्‌दों के आधार पर

(३) सुवचन/कहावतों के आधार पर

विज्ञापन

वर्तमान युग स्पर्धा का है और विज्ञापन इस युग का महत्त्वपूर्ण अंग है । उत्कृष्ट विज्ञापन पर उत्पाद की बिक्री का आँकड़ा निर्भर करता है । आज संगणक तथा सूचना प्रौद्‍योगिकी के युग में, अंतरजाल (इंटरनेट) एवं भ्रमणध्वनि (मोबाइल) के क्रांति के काल में विज्ञापन का क्षेत्र विस्तृत होता जा रहा है । विज्ञापनों के कारण किसी वस्तु, समारोह, शिविर आदि के बारे में पूरी जानकारी आसानी से समाज तक पहुँच जाती है । लोगों के मन में रुचि निर्माण करना, ध्यान आकर्षित करना विज्ञापन का मुख्य उद्‌देश्य होता है ।

विज्ञापन लेखन करते समय निम्न मुद्‌दों की ओर ध्यान दें : • कम-से-कम शब्दों में अधिकाधिक आशय व्यक्त हों । • विज्ञापन की ओर सभी का ध्यान आकर्षित हो, अतः शब्दरचना, भाषा शुद्‌ध हो । • जिसका विज्ञापन करना है उसका नाम स्पष्ट और आकर्षक ढंग से अंकित हो । • विषय के अनुरूप रोचक शैली हो । आलंकारिक, काव्यमय, प्रभावी शब्दों का उपयोग करते हुए विज्ञापन अधिक आकर्षक बनाएँ । • ग्राहकों की बदलती रुचि, पसंद, आदत, फैशन एवं आवश्यकताओं का प्रतिबिंब विज्ञापन में परिलक्षित होना चाहिए । • विज्ञापन में उत्पाद की गुणवत्ता महत्त्वपूर्ण होती है, अतः छूट का उल्लेख करना हर समय आवश्यक नहीं है । • विज्ञापन में संपर्क स्थल का पता, संपर्क (फोन, मोबाइल नंबर, ई-मेल आईडी) का स्पष्ट उल्लेख करना आवश्यक है । • विज्ञापन केवल पेन से लिखें । • पेन्सिल, स्केच पेन का उपयोग न करें । • चित्र, डिजाइन बनाने की आवश्यकता नहीं है । • विज्ञापन की शब्द मर्यादा पचास से साठ शब्दों तक अपेक्षित है । विज्ञापन में आवश्यक सभी मुद्‌दों का समावेश हो ।

उदाहरण : निम्नलिखित जानकारी के आधार पर आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए :

ATM के लिए सुरक्षा रक्षक की आवश्यकता

कालावधि

शैक्षिक योग्यता

आयु सीमा

संपर्क

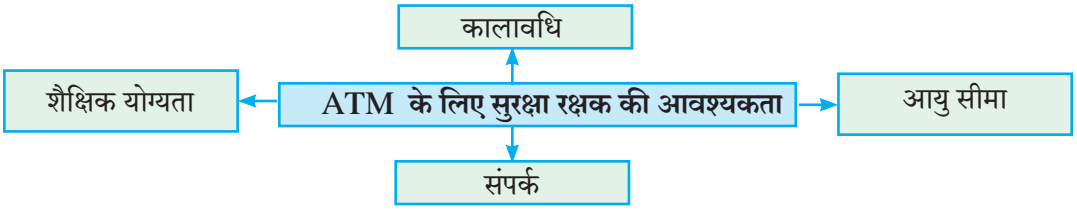

निबंध लेखन

निबंध लेखन एक कला है । निबंध का शाब्दिक अर्थ होता है 'सुगठित अथवा सुव्यवस्थित रूप में बँधा हुआ' । साधारण गद्य रचना की अपेक्षा निबंध में रोचकता और सजीवता पाई जाती है । निबंध गद्य में लिखी हुई रचना होती है, जिसका आकार सीमित होता है । उसमें किसी विषय का प्रतिपादन अधिक स्वतंत्रतापूर्वक और विशेष अपनेपन और सजीवता के साथ किया जाता है । एकसूत्रता, वस्तु/व्यक्तित्व का प्रतिबिंब, आत्मीयता, कलात्मकता निबंध के तत्त्व माने जाते हैं । इन तत्त्वों के आधार पर निबंध की रचना की जाती है ।

निबंध लिखते समय निम्नलिखित बातों की ओर ध्यान दें :

• प्रारंभ, विषय विस्तार, समापन इस क्रम से निबंध लेखन करें । • विषयानुरूप भाषा का प्रयोग करें । • भाषा प्रवाही, रोचक और मुहावरेदार हो । • कहावतों, सुवचनों का यथास्थान प्रयोग करें । • शुद्ध, सुवाच्य और मानक वर्तनी के अनुसार निबंध लेखन आवश्यक है । • सहज, स्वाभाविक और स्वतंत्र शैली में निबंध की रचना हो । • विचार स्पष्ट तथा क्रमबद्ध होने आवश्यक हैं । • निबंध की रचना करते समय शब्द चयन, वाक्य विन्यास की ओर ध्यान देना आवश्यक है । • निबंध लेखन में विषय को प्रतिपादित करने की पद्धति के साथ ही कम-से-कम चार अनुच्छेदों की रचना हो । • निबंध का प्रारंभ आकर्षक और जिज्ञासावर्धक हो । • निबंध के मध्यभाग में विषय का प्रतिपादन हो । निबंध का मध्यभाग महत्त्वपूर्ण होता है इसलिए उसमें नीरसता न हो । • निबंध का समापन विषय से संबंधित, सुसंगत, उचित, सार्थक विचार तक ले जाने वाला हो ।

आत्मकथनात्मक निबंध लिखते समय आवश्यक तथा महत्त्वपूर्ण बातें :

• आत्मकथन अर्थात एक तरह का परकाया प्रवेश है । • किसी वस्तु, प्राणी, पक्षी, व्यक्ति की जगह पर स्वयं को स्थापित/आरोपित करना होता है । • आत्मकथनात्मक लेखन की भाषा प्रथम पुरुष, एकवचन में हो । जैसे - मैं .... बोल रहा/रही हूँ । • प्रारंभ में विषय से संबंधित उचित प्रस्तावना, सुवचन, घटना, प्रसंग संक्षेप में लिख सकते हैं । सीधे 'मैं... हूँ' से भी प्रारंभ किया जा सकता है ।

वैचारिक निबंध लिखते समय आवश्यक बातें :

• वैचारिक निबंध लेखन में विषय से संबंधित जो विचार होते हैं, उनको प्रधानता दी जाती है । • वर्णन, कथन, कल्पना से बढ़कर विचार महत्त्वपूर्ण होते हैं । • विचार के पक्ष-विपक्ष में लिखना आवश्यक होता है । • विषय के संबंध में विचार, मुद्दे, मतों की तार्किक प्रस्तुति महत्त्वपूर्ण होती है । • पूरक पठन, शब्दसंपदा, विचारों की संपन्नता जितनी अधिक होती है; उतना ही वैचारिक निबंध लिखना हमारे लिए सहज होता है ।

जैसे :

निबंध लेखन के प्रकार

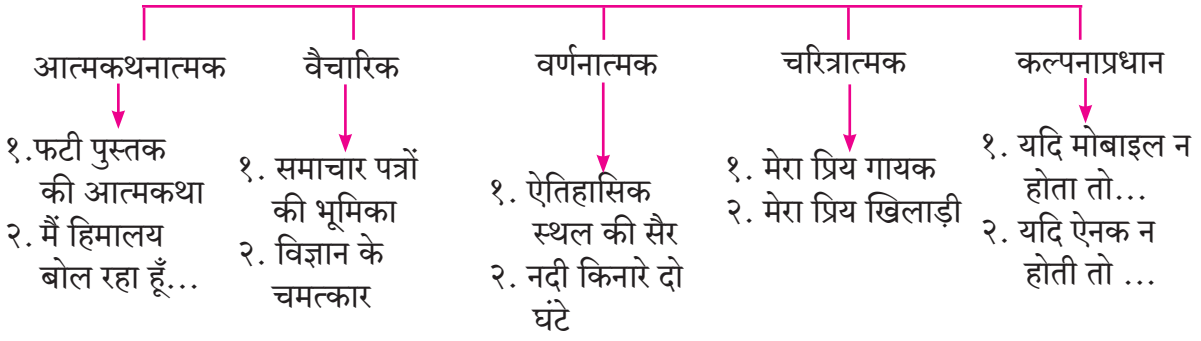

भावार्थ– पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ४३ : पहली इकाई, पाठ ९. ब्रजवासी–संत सूरदास

यशोदा जी बार–बार यों कहती हैं कि ब्रज में कोई भी मेरा हितैषी है जो जाते हुए मेरे गोपाल (कृष्ण) को रोक ले? राजा कंस ने मेरे बेटे को किस काम से मथुरा बुलाया है ? कृष्ण को मथुरा ले जाने के लिए यह अक्रूर मेरे लिए काल का रूप धारण करके आया है। कंस मेरे पास की गायें, हाथी सभी धन ले ले, मुझे बंदी बनाकर कारागार में डाल दें, किंतु मुझे इतना सुख दे दें कि कमल के समान नयनोंवाले मेरे कृष्ण, मेरे नयनों के सामने खेलते रहें हैं। मैं दिनभर उसका मुख देखती रहूँ और रात में उन्हें अपनी गोद में चिपकाकर सो सकूँ। यदि कृष्ण के मथुरा जाने के दुख के बाद दुर्भाग्यवश जीवित भी रही तो हँसकर किसे बुलाऊँगी। सूरदास जी कहते हैं कि इस तरह कमल के समान सुंदर नेत्रोंवाले कृष्ण के गुणों का गान करते–करते नंद जी की पत्नी, महारानी माता यशोदा अंत्यत दुःखी हो जाती हैं। मैं अत्यंत दुखित नंदरानी की दशा का प्रत्यक्ष वर्णन कहाँ तक करूँ ?

कृष्ण के मथुरा चले जाने पर उनके वियोग में दुखी एक गोपी कहती है कि प्रेम चाहे जिससे भी करो उसका अंत दुखदायी ही होता है। पतंगा आग से प्रीति करता है तो उसका अंत आग में जलने से होता है क्योंकि वह प्रेम में अपने आपको आग में समर्पित कर देता है। भौंरा कमल से प्रेम करता है, वह कमल के फूल के बीच बैठ जाता है और अंत में सूर्यास्त के बाद वह कमल की पंखुड़ियों में अर्थात कमल के फूल के बीच बंद होकर अपने प्राण त्याग देता है। हिरन नाद से प्रेम करता है, नाद सुनकर वह अपने स्थान पर खड़ा हो जाता है जिसके कारण बहेलिये के बाण उसे भेद देते हैं। नहीं तो वह चारों तरफ भागता रहता है तब उसे वह बहेलिया नहीं मार पाता। हमने माधव (कृष्ण) से प्रीति की तो उन्होंने गोकुल से जाते समय हमें बताया तक नहीं। कुछ कहकर जाते तो हमें इतना दुख नहीं होता।

सूरदास जी कहते हैं कृष्ण के मथुरा चले जाने पर गोपियाँ इतनी दुखी हैं कि उनके नेत्रों से सदैव आँसू बह रहे हैं।

कृष्ण के मथुरा चले जाने पर राजा वृषभान की पुत्री कुमारी राधा भी कृष्ण के लिए बहुत दुखी हैं। कृष्ण के श्रम बिंदु (पसीने) से राधा जी के हृदय एवं वस्त्र भीगे हैं। कहीं कृष्ण की खुशबू निकल न जाए, इस डर से वे साड़ी नहीं धुलवा रही हैं। मुख नीचे किए रहती हैं। अन्यत्र देखती नहीं। उनकी दशा हारे हुए जुवारी की तरह हो गई है। उनके बाल बिखरे हुए हैं। शरीर सूख गया है। राधा जी कुम्हला गई है जैसे कमलिनी के ऊपर हिमपात हो गया है। यही दशा कृष्ण के वियोग में राधा की हो गई है।

ब्रज के लोगों की स्थिति का वर्णन कहाँ तक करूँ ?

हे कृष्ण सुनिए, आपके बिना ब्रज के लोगों के दिन–रात के बुरे हाल हैं, गोपियाँ ग्वाल–बाल, गायें और उनके बछड़े मलिन वदन तो हैं ही उनका शरीर भी काला पड़ गया है। उनका शरीर तो वसंत और शिशिर ऋतु के पत्ते झड़ जाने वाले पेड़ों की तरह हो गया है। मथुरा की तरफ से आने वाले रास्ते में जो कोई दूर से दिखाई देता है, उनसे सभी ब्रजवासी आपकी कुशलता पूछने लगते हैं। इस मार्ग से जाने वाले पथिकों के पैरों में वे प्रेम में आतुर होकर लिपट जाते हैं। उनकी स्थिति वन में रहने वाले उस चातक की–सी हो गई है, जो वन में सभी चीजों के होने के बावजूद स्वाति नक्षत्र के जल की प्रतीक्षा करता रहता है।

सूरदास जी कहते हैं कि हे कृष्ण ! आपके संदेश पूछने के डर के कारण पथिकों ने ब्रज जाने वाले मार्ग का ही त्याग कर दिया है।

कृष्ण उद्धव से कहते हैं, हे ऊधौ मुझे ब्रज भूलता ही नहीं है, मैं वृंदावन और गोकुल के बाग बगीचे, वन, सघन कुंजों की छाया नहीं भूल पाता हूँ। माता यशोदा और बाबा नंद के दर्शन का सुख बहुत याद आता है। दोस्तों के साथ माखन–रोटी का भोजन, गोपियों, ग्वालों और बाल सखा मित्रों के साथ सदैव दिनभर हँसना और खेलना भी भूलता ही नहीं है। सूरदास जी कहते हैं कि ब्रज में रहने वाले लोग धन्य हैं, जिनके हितैषी जगताधार श्री कृष्ण हैं।

भावार्थ : पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ९० : दूसरी इकाई, पाठ ७. अकथ कथ्यौ न जाइ– संत नामदेव

राम का नाम ही हमारी खेती-बाड़ी है । बनवारी हमारी धन-दौलत हैं । यह वह धन है जिसको न कोई चुरा सकता है न इसपर काई लगती है । संतों की संगति पाकर दसों दिशाओं में राम नाम को पाया जा सकता है । संत नामदेव कहते हैं कि जब तक मेरे कृष्ण मेरे साथ हैं मुझे कौन आहत कर सकता है ?

राम नाम में यह नामदेव राममय हो गया है । तुम मेरे स्वामी हो, मैं तुम्हारा सेवक हूँ । हरि सरोवर की तरह हैं और भक्तगण सरोवर में तरंगों की तरह हैं । भला सेवक अपने स्वामी को छोड़कर कहाँ जाएँगे । हरि पेड़ की तरह हैं और भक्तगण पंछी की तरह हैं । भक्तगण हरिभजन में लीन होकर अपने अहम को गँवा देते हैं ।

नामदेव कहते हैं कि जिन्होंने हरि के नाम को पा लिया है; वे तो सीधे मुक्ति पा जाते हैं । यमराज उन्हें क्या सताएगा ? भक्ति अनेक प्रकार से की जाती है । भक्ति के फल को कौन टाल सकेगा । जो ब्रह्म के निकट चला जाता है वह; तो मुक्त हो ही जाता है । जिसका नाम लेने मात्र से ही सभी का उद्धार हो जाता है, उसे कोई पार नहीं पा सका है । नामदेव कहते हैं कि यह अब मेरी समझ में आ गया है ।

मैं तो राम नाम का जाप करूँगा । केवल उन्हीं का नाम सुनूँगा, जिसके प्रताप से मोह-माया के जल में नहीं बहूँगा । राम नाम की महिमा अकथनीय है । उसे कह पाना या कागज पर लिख पाना संभव नहीं है । वह सारे भुवनों का स्वामी है । वही माता है, वही पिता है । वह सारे जग का दाता है पर सहजता से मिल जाता है । नामदेव कहते हैं कि उसे पाने के लिए हृदय से पुकारना पड़ेगा ।

— o —

7JYNGC